(5) अन्य कारक (Other Factors) : वर्तमान समय में कुछ नगर विस्थापित जनसंख्या, के पुनर्वास हेतु स्थापित किए गए मिलते हैं। फरीदाबाद, चण्डीगढ़ नगर पाकिस्तान से विस्थापित जनसंख्या के पुनर्वास के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्थापित किये गये थे।

विश्व के कई नगरों की उत्पति गाँवों से भी होती है। इस प्रकार के गाँव सर्वप्रथम निकटवर्ती क्षेत्र के लिए व्यापारिक मण्डी के रूप में कार्य करते हैं तथा बाद में यहाँ ग्रामीण मण्डियों विकसित होकर नगर के रूप में बदल जाती हैं। भारत में हायरस, हापुड़, मोगा नगर आदि इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

कुछ नगरों की स्थापना एवं विकास में स्वास्थवर्द्धक जलवायु का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत में बिटिश शासकों ने उत्तरी भारत की कठोर गर्मी से बचने के लिए देश के पर्वतीय भागों में अनेक विश्राम स्थल स्थापित कियेक जिन्होंने बाद में विकसित होकर नगरों का स्वरूप ले लिया। शिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग तथा मसूरी, ऊटी आदि इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

1.5 सारांश (Summing-up)

मनुष्य के लिए रोटी, कपड़ा के बाद मकान मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है।

जहाँ तक ग्रामीण अधिवासों के उदभव का प्रश्न है तो यह लिखित इतिहास से पूर्व ही शुरू हो चुका था। पूर्व मानव जाति खानाबदोश जीवन जीता था। उसकी तलाश कन्दमूल, जल, फल हुआ करते थे। धीरे-धीरे वे लोग पशुओं को मार कर भोजन प्राप्त करने लगे थे।

ग्रामीण अधिवासों का जो स्तर आज हमें देखने को मिलता है वह उसे अनेक चरणों से गुजरने के बाद प्राप्त हुआ है। उद्‌विकास (Evolution) सिद्धांत के समर्थक विद्वानों के अनुसार ग्रामीण अधिवासों का उद्‌विकास निम्नलिखित तीन चरणों से गुजर कर हुआ है:-

(i) शिकार करने तथा भोजन संग्रह करने का स्तर (Hunting and Food Gathering Stage)

(ii) चारागाह स्तर (Pastoral Stage)

(iii) कृषि स्तर (Agricultural Stage)

उपर्युक्त प्रथम स्तर में मानव अपने पेट को भरने के लिए खेती न कर फल, फूल, कन्दमूल, जल आदि का भोजन के रूप में संग्रह करता था, पशुओं का शिकार करता था। वह वर्षो, तेज धूप आदि से बचने के लिए जंगली क्षेत्रों में शरण ले लेता था। इस तरह लोग ऋतु परिवर्तन के साथ अपना निवास स्थान बदल लेते थे। इस प्रकार एक अधिवास का उद्‌भव हुआ जहाँ एक ही परिवार अथवा रक्त से जुड़े 40-80 व्यक्ति एक साथ रहते थे। भारत जैसे विकासशीन देशों में आज भी कुछ जनजातिया क्षेत्रों में ग्रामीण अधिवासों का यह स्तर झाराखंड राज्य की बिरहोर व खाड़िया, मध्यप्रदेश में बस्तर क्षेत्र की भाड़िया व गोंड; कर्नाटक की चेचू, असम राज्य की कूकी क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

दूसरा स्तर पशुचारण जिसमें मानव ने जंगली पशुओं को मारने के बजाय उन्हें पालना प्रारम्भ कर दिया। जिससे वे लोग चारागाह के समीप रहना शुरू कर दिये। जहाँ चारा खत्म हो जाता लोग दूसरे स्थान में प्रवास कर जाते थे।

तीसरी अवस्था में मानव कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करने लगा। कृषि ने मानव को स्थायी रूप से भूमि से बाँध दिया। अब मानव द्वारा भूमि से स्थायी एवं लाभप्रद सम्बन्ध स्थापित होने के कारण ग्रामीण अधिवासों को स्थायित्व प्राप्त हुआ तथा जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि हुई, वैसे-वैसे ग्रामीण अधिवासों का

विस्तार होता गया। दूसरी ओर नगर रचना मानव के सांस्कृतिक विकास से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण घटना है जो उसके पौरूष, सहकार, चातुर्थ, तकनीकी विकास, बौद्धिकता और विशिष्ट जीवन-शैली को चरितार्थ करती है।

नगरों के उद्भव से तात्पर्य नगरों की उत्पति के कालिक पक्ष से है। जब कोई अधिवास नगर बन जाता है तो वह उसकी उत्पति का समय होता है। नगर की उत्पति दो प्रकार से होती है। कुछ अधिवास छोटी बस्ती के रूप में बसाये जाते हैं, लेकिन अनुकूल परिस्थिति में अपने क्रियाकलाप बढ़ाकर नगर का रूप धारण कर लेते हैं। जिस समय वे नगर कहलाने लगते हैं वह अवस्था उनके उद्भव की प्रतीक है। कई विद्वानों ने नगरीय अधिवासों की उत्पति के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये है। जिसमें लुईस ममफोर्ड (Lewis Mumford) के अनुसार नगरी अधिवासों की उत्नति ग्रामीण अधिवासों से हुई है। ग्रामीण अधिावासों के क्रामिक विकास से बड़े गाँव तथा कालान्तर में बड़े ग्रामों से नगरीय अधिवासों का विकास हुआ। ममफोर्ड (Mumford) का मानना है कि ग्रम और नगर की संस्कृति के मिश्रण से नगर का स्वरूप विकसित हुआ।

नगरों के विकास से तात्पर्य उनके स्वरूप और कार्य में वृद्धि से है। सीमित कार्यो के चलते उनका आकार और विस्तार मन्द गति से बढ़ता है, जबकि अधिक कार्य सम्पादन से जनसंख्या बढ़ती है जो उनकी आकृति को विकसित करती है।

नगरों की उत्पति और विकास को प्रभावित करनेवाले कारकों को निम्नलिखित पाँच 5 वर्गों में रखा जा सकता है:-

(i) प्राकृतिक कारक (Natural Factors)

(ii) आर्थिक कारक (Economicd Factors)

(iii) राजनैतिक कारक (Political Factors)

(iv) धार्मिकक/सामाजिक व सांस्कृतिक कारक (Religious Factors/Socio Cultural Factors)

(v) अन्य कारक (Other Factors)

1.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. ग्रामीण अधिवास से क्या आशय है? ग्रामीण अधिवासों की उत्पति और उद्विकास पर प्रकाश डालें।
2. ग्रामीण अधिवास को परिभाषित करें तथा ग्रामीण अधिवासों की उत्पति तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना कीजिये।
3. नगरीय एवं नगरीय अधिवास में अन्तर बताइए।

1.7 संदर्भ पुस्तकें (References Book)

1. डॉ० एस० डी० मौर्य : अधिवास भूगोल
2. डॉ० एच० एस० गर्ग : अधिवास भूगोल
3. डॉ० सुरेश चन्द्र बंसल : नगरीय भूगोल
4. डॉ० आर० सी० तिवारी : अधिवास भूगोल।

●●●

नगरीकरण और संबंधित समस्याएँ
Urbanization and Related Problems

पाठ-संरचना (Lesson-Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)

2.1 परिचय (Introductions)

2.2 नगरीकरण की परिभाषा (Definiation of Urbanization)

2.3 नगरीकरण के निर्धारक (Definition of Ubranization)

2.4 विश्व में नगरीकरण का प्रादेशिक स्वरूप (Regional Pattern of Urbanization in the World)

2.5 नगरीय समस्याएँ (Urban Problems)

2.6 सारांश (Summing up)

2.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

2.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह बताना है कि नगरीकरण (Urbanization) क्या है? इसकी उत्पत्ति एवं विकास के लिए कौन-कौन से कारक उत्तरदायी हैं? साथ ही नगरीकरण (Urbanization) से उत्पन्न समस्याओं की जानकारी प्रदान करनी है।

2.1 परिचय (Introduction)

वर्तमान समय की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक घटना नगरीकरण (Urbanization) की भी है। नगरों का तीव्र गति से बढ़ना तथा नगरों की संख्या में अपार वृद्धि वर्तमान युग का महत्वपूर्ण तथ्य है। ऐसा कहा जाता है कि सबसे पहले नगर इस पृथ्वी पर 5000 से 6000 वर्ष पूर्व देखने में आये। अत: नगर पृथ्वी पर नये नहीं है। लेकिन मानव इतिहास में नगरीकरण की प्रक्रिया की गति बहुत धीमी रही है। प्रश्न यह है कि नगरीकरण क्या है? इसका शाब्दिक अर्थ है, नगरीय हो जाना अथवा बना देना। नगरीकरण जनसंख्या के नगरीय होने से सम्बन्ध रखता है। यह नगरीय जनसंख्या जिन भू-भागों पर रहने लगती है, वह नगरीय भू-भाग कहलाता है। इस प्रकार जनसंख्या का नगरीय होना, विभिन्न भू-भागों के नगरीय होने से जुड़ा हुआ है। वास्तव में नगरीय जनसंख्या व उसके अनुपात में वृद्धि होना नगरीकरण (Ubranization) कहलाता है।

2.2 नगरीकरण की परिभाषा (Definition of Urbanization)

'नगरीकरण' (Urbanization) को विद्वानों ने निम्नलिखित तरह से परिभाषित किया है :-

ई०ई० बर्गेल (E.E.Bergel) ने कहा है कि- "ग्रामों के नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं।" ('The conversion of villages into urban areas is known the process of urbanization').

जी०टी० ट्रिवार्था (G.T. Trewartha) ने नगरीकरण को परिभाषित करते हुए उसकी तीन विशेषताओं के बारे में बताया है जो इस प्रकार हैं :- "कुल जनसंख्या में नगरीय स्थानों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात को नगरीकरण का स्तर कहा जाता है।" ('The level of urbanization is defined as the proportion of total population residing in urban places').

'नगरीकरण की दर से हमारा तात्पर्य होता है कि विभिन्न समयों में कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात में कितनी वृद्धि हुई।' ('The rate of urbanization is the present increase over a given period in the proportion of total population living in urban communities').

उपर्युक्त परिभाषाएँ स्पष्ट करती हैं कि नगरीकरण नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात, कुल जनसंख्या की तुलना में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर, नगरीय जनसंख्या में समय-समय पर होनेवाले परिवर्तन को बताता है।

ग्रिफिथ टेलर (Grifith Taylor) - ने कहा है कि - 'गाँवों से नगरों की ओर जनसंख्या का स्थानातरण ही 'नगरीकरण' कहलाता है।' ('Urbanization is a shift of people from village to city').

यदि नगरों की जनसंख्या में उतनी ही या उससे कम वृद्धि होती है जितनी वृद्धि ग्रामों की जनसंख्या में होती है तब तो ऐसी दशा में यह नहीं कहा जा सकता कि नगरीकरण में कोई वृद्धि हुई है। वास्तव में यदि मनुष्यों का चिन्तन, आचार-विचार तथा सामाजिक मूल्य नगरीय हैं तो वे ग्रामों में रहते हुए भी नगरीकृत हैं, परन्तु हमारा भौगोलिक उद्देश्य समाज के उस वर्ग से है जो प्राय: अकृषित कार्यों (Non-agricultural Actvities) में लगा हुआ है।

किंग्सले डेविस (Kingsley Davis) के अनुसार 'कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात या इस अनुपात में वृद्धि को 'नगरीकरण' कहते हैं। (Urbanization refers to the proportion of the total population concentrated in urban settlements or else to arise in this proportion).

डेविस (Davis) ने आगे बताया है कि नगरीकरण सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण प्रारूप में क्रांतिकारी परिवर्तन की ओर संकेत करता है। यह स्वयं आधारभूत अर्थव्यवस्था और तकनीकी विकास का परिणाम है।

बी०एन० घोष (B.N. Ghosh) के अनुसार- "नगरीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें गाँव कस्बों में और कस्बे नगरों में परिवर्तित होते जाते हैं।" ("Urbanisation is the process by which villagers turn into towns and towns develop into cities").

वी०एल०एस० प्रकाशा राव (V.L.S. Prakasa Rao) 'नगरीकरण एक प्रक्रिया के रूप में एकल केन्द्र अथवा बहु-नाभीय केन्द्र के चारों ओर अकृषित कार्य-कलापों व भूमि उपयोगों का संकेन्द्रण है। यह जनसंख्या के ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रों को प्रवास करने के परिणामस्वरूप घटित होता है। यह नगरीय क्षेत्र या तो समीपवर्ती देहात क्षेत्र पर अपने विकास के लिए निर्भर करते हैं, अथवा आधुनिक संचार एवं परिवहन साधनों की सहायता से इस समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करते हैं।' ("Urbanisation as a process is concentration of non-agricultural occupations and landuses around a single nucleus or multiple nuclei. This is primarily the result of rural to urban shift of population, with urban centres growing either at the

expense of the countryside or serving the countryside through modern transport and communication systems").

उपर्युक्त परिभाषाओं से विदित होता है कि नगरीकरण स्थिर नहीं है, बल्कि गतिशील है। इसकी गति पर अर्थव्यवस्था का प्रभाव पड़ता है। यह अर्थव्यवस्था जितनी तीव्रता से कृषि अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ती है, उतनी तेजी से नगरीकरण भी बढ़ता है। नगरों की जनसंख्या में वृद्धि होती है। कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात भी बढ़ता रहता है। इसीलिए यह कहा जाता है कि नगरीकरण एक प्रक्रिया है। इसकी परिभाषाओं से नगरीकरण की विशेषताओं को इस तरह समझा जा सकता है -

(i) कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात,

(ii) नगरों की संख्या व उनके आकार में वृद्धि,

(iii) नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा अधिक वृद्धि होना,

(iv) ग्रामों का कस्बों व नगरों में परिवर्तित होना,

(v) ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवासित करना,

(vi) नगरीय जनसंख्या में विभिन्न समय में होने वाली वृद्धि,

(vii) प्राथमिक कार्यों में लगी जनसंख्या की तुलना में गैर-प्राथमिक कार्यों में लगी जनसंख्या में भारी वृद्धि होना।

(viii) किसी स्थान, प्रदेश या राष्ट्र का कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ना।

(ix) ग्रामीण क्षेत्रों पर नगरीय कार्यों का विस्तार होना, धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रों को नगरीय क्षेत्रों में मिला दिया जाना।

2.3 नगरीकरण के निर्धारक (Determinants of Urbanization)

नगरों की उत्पत्ति तथा विकास के लिए अनेक भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कारक उत्तरदायी होते हैं। नगरीय विकास और नगरीकरण में प्रत्यक्ष धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अत: नगरीकरण को प्रभावित करनेवाले समस्त कारकों को निम्नांकित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है-

(i) भौगोलिक कारक (Gerographical Factors)

(ii) आर्थिक कारक (Economic Factors)

(iii) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक (Socio-cultural factors)

(iv) राजनीतिक कारक (Political Factors)

(i) **भौगोलिक कारक (Geographical Factors) :** मानव निवास के लिए उपयुक्त पर्यावरण में नगरों का विकास अधिक होता है। समतल एवं उपजाऊ मैदानी भाग जहाँ अधिक जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोज्य पदार्थ, उद्योगों के लिए पर्याप्त कच्चे माल तथा परिवहन की सुवधिाएँ उपलब्ध होती हैं। जनसंख्या संकेन्द्रण और नगरीय विकास के लिए उपयुक्त होते हैं। विश्व के प्राचीन नगरों का विकास उपजाऊ नदी घाटियों से हुआ था। मिश्र में नील नदी, दक्षिण-पश्चिम एशिया में दजला एवं फरात नदियों, भारत में सिन्धु तथा गंगा नदी और चीन में ह्वांगहो तथा

यांगटिसीक्यांग नदियों की घाटियों में ही प्राचीन सभ्यता और प्रमुख नगरों का विकास हुआ था। वर्तमान काल में भी विश्व के वृहत नगर मैदानी भागों में अथवा समुद्रतटीय समतल भूमियों पर विकसित हुए हैं। सागर तटीय भागों में समुद्र पत्तन तथा व्यापारिक केन्द्र के रूप में और मैदानी भागों में मार्गसंगम पर परिवहन केन्द्र के रूप में नगर विकसित होते हैं। मुनष्य के लिए अनुकूल जलवायु वाले प्रदेशों में ही बड़े-बड़े नगरा पाये जाते हैं।

अत: भौगोलिक कारकों के अनुकूल होने पर नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती है।

(ii) **आर्थिक कारक (Economic Factors) :** नगरीकरण आर्थिक प्रगति का सहगामी है। सामान्यत: आर्थिक विकास के साथ-साथ नगरीकरण में भी उत्पन्न होता है। कृषि कला में सुधार, यातायात साधनों के विकास, प्रौद्योगिकीय विकास, औद्योगिक पदार्थों एवं संसाधनों की उपलब्धि आदि का नगरीकरण पर प्रत्यक्ष एवं सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

(अ) कृषि कला में सुधार होने से कृषि उत्पादनों में वृद्धि होती है जिससे अधिक जनसंख्या के लिए पोषण की क्षमता प्राप्त होती है और उद्योगों के कच्चेमाल की भी उपलब्धि होती है। उससे अन्य व्यवसायों का विकास होने वाला है और ग्राम्य रूपान्तरण द्वारा नगरों की संख्या और नगरीय जनसंख्या दोनों में वृद्धि होती है। इससे नगरीकरण का विकास होता है। कृषि में यंत्रीकरण से अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में कृषि में बहुत थोड़ी जनसंख्या (5 से 10 प्रतिशत) लगी होने पर भी अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इस प्रकार अधिसंख्य जनसंख्या द्वितीयक और तृतीयक कार्यों में संलग्न है और नगरों में निवास करती है।

(आ) नगरीकरण के विकास में यातायात के साधनों के विकास तथा विस्तार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उद्योगों के लिए कच्चे माल तथा उत्पादित निर्मित माल के परिवहन व्यापारिक वस्तुओं के परिवहन, श्रमिकों के आवागमन आदि के लिए उपयुक्त तथा तीव्रगामी परिवहन के साधनों की आवश्यकता होती है। अत: परिवहन सुविधा के अभाव में नगरीकरण में तीव्रता नहीं आ सकती।

(स) औद्योगिकीकरण और नगरीकरण एक-दूसरे के सहचर माने जाते हैं। औद्योगिक विकास के साथ-साथ परिवहन के साधनों, व्यापार, वाणिज्य आदि विविध प्रकार के गैर-कृषिय कार्यों का विकास होता है जिनका संकेन्द्रण नगरों में होता है। औद्योगिकीकरण में उन्नति होने पर अनेक नये नगर उत्पन्न होते हैं और पूर्ववर्ती नगरों का विस्तार और विकास होता है।

(ई) वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास के परिणामस्वरूप कृषि, उद्योग आदि सभी उत्पादों में वृद्धि होती है। परिवहन तथा संचार माध्यमों के विस्तार से व्यापार तथा वाणिज्य सम्बन्धी क्रियाओं का विकास तीव्रता से होता है। उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग बहुमंजिले भवनों के निर्माण पेयजल आपूर्ति, ईंधन आपूर्ति, भोज्य पदार्थ की आपूर्ति तथा परिवहन साधनों आदि में होने पर बड़े-बड़े नगरों के रूप में जनसंख्या का जमाव सम्भव हो जाता है। इस प्रकार तकनीकी विकास से नगरीकरण में प्रगति होती है।

(उ) नगरों में उद्योगों की स्थापना और विकास के लिए औद्योगिक कच्चेमालों और कारखानों के संचालन हेतु शक्ति के साधनों (कोयला, पेट्रोलियम, जल-विद्युत आदि) की आवश्यकता होती

है। अत: विश्व के जिन देशों में औद्योगिक खनिज पदार्थों तथा शक्ति के साधनों की बहुलता है और उनका विदोहन भी किया गया है, वहाँ नगरीकरण का स्तर ऊँचा है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और पश्चिमी यूरोपीय देशों में उच्च नगरीकरण के लिए औद्योगिक कच्चेमालों की उपलब्धता तथा शक्ति-संसाधनों के विकास का प्रमुख योगदान है।

(iii) **सामाजिक-सांस्कृतिक कारक (Socio-cultural Factors) :** सामाजिक सुविधाओं के विकास तथा धार्मिक और ऐतिहासिक स्थानों के महत्त्व का भी नगरीकरण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है। नगरीकरण को प्रभावित करनेवाले कुछ प्रमुख सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारक निम्नांकित हैं :-

(अ) जिन स्थलों पर सामाजिक सुविधाओं जैसे- शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य आदि का विकास होता है, वहाँ बाहर से आनेवाले आगुन्तुकों की संख्या बढ़ती जाती है जिससे वहाँ अन्य नगरीय सुविधाएँ भी विकसित होने लगती हैं। विश्व के जिन प्रदेशों में इन सुविधाओं का संकेन्द्रण अधिक हुआ है, वहाँ नगरीकरण का उच्च स्तर पाया जाता है। हारवर्ड, कैम्ब्रिज, आक्सफोर्ड, पंतनगर, शांतिनिकेतन, खड़गपुर आदि अनेक नगरों का विकास शैक्षिक केन्द्र के रूप में हुआ है। भारत सहित विश्व के कई देशों में अनेक नगरों का विकास स्वास्थ्य तथा मनोरंजन केन्द्र के रूप में हुआ है। भारत के पर्वतीय नगर शिमला, दार्जिलिंग, मंसूरी, पंचमढ़ी आदि इसके उदाहरण हैं।

(आ) धार्मिक केन्द्र और तीर्थस्थल के रूप में भी नगरों का विकास होता है। येरूसलम, मक्का, मदीना, रोम प्रयाग, काशी, हरिद्वार, मथुरा आदि नगर मुख्यत: धार्मिक स्थल के रूप में विकसित तथा प्रसिद्ध हैं। धार्मिक स्थलों पर यात्रियों के एकत्र होते रहने से वहाँ पर्यटन-सम्बन्धी विविध कार्यों तथा सेवाओं का विकास होता है जिससे नगर का विस्तार संभव होता है।

(ई) बहुत से ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों पर नगर स्थित हैं। प्राचीन नगर के बाह्य भागों का विकास आधुनिक नगर के रूप में हो गया है। अत: नगरीकरण के विकास में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

(iv) **राजनीतिक कारक (Political Factors) :** नगरीय विकास तथा नगरीकरण को प्रभावित करनेवाले कारकों में राजनीतिक कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। प्राचीन तथा मध्यकाल के किला नगरों तथा आधुनिक काल के राजधानी नगरों का विकास राजनीतिक आवश्यकताओं के ही परिणामस्वरूप हुआ है। राष्ट्रीय सरकारें विशिष्ट स्थानों पर आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराकर नये नगरों की स्थापना करती हैं। अनेक औद्योगिक नगरों, प्रशासनिक केन्द्रों (राजधानी नगर), शैक्षणिक केन्द्रों, मनोरंजन तथा पर्यटन केन्द्रों की स्थापना और विकास सरकारी निर्णय तथा प्रयास का ही परिणाम होता है। भारत में दिल्ली, लखनऊ, भोपाल, पटना, जयपुर,चण्डीगढ़, आदि नगरों का विकास राजधानी नगर के रूप में हुआ है। सुरक्षा तथा सैनिक महत्त्व के स्थलों पर भी सरकारें सैनिक केन्द्र के रूप में नगरों को विकसित करती हैं। विकासशील देशों में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नगरीकरण में तेजी से प्रगति हो रही है।

2.4 विश्व में नगरीकरण का प्रादेशिक प्रतिरूप (Regional Pattern of Urbanisation in the World)

पाठकगण हमलोग पहले यह जान चुके हैं कि नगरीकरण क्या हैं? नगरों की उत्पत्ति और विकास के लिए अनेक भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कारक उत्तरदायी होते हैं, के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। अब हमलोग यह जानने की कोशिश करेंगे की विश्व में नगरीकरण का प्रादेशिक प्रतिरूप (Regional Pattern) किस प्रकार का है। विश्व के विभिन्न भागों में नगरीकरण के स्तर में अत्यधिक असमानता पायी जाती है। सन् 2000 के आँकड़े के अनुसार विश्व की 47.2 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। विकसित देशों में लगभग 77 प्रतिशत जनसंख्या, लैटिन अमेरिका की 75.4 प्रतिशत जनसंख्या तथा रूस सहित मध्य एवं पूर्वी यूरोप की 63.4 प्रतिशत जनसंख्या में रहती है। विकासशील देशों की नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 40 है। किन्तु अल्पतम विकसित देशों की औसतन 25.7 प्रतिशत जनसंख्या ही नगरीय है। दक्षिण एशियाई देशों में नगरीकरण (29.4 प्रतिशत) का स्तर निम्न है। पूर्वी एशिया (37.7 प्रतिशत) और उपसहारा अफ्रीका (33.9 प्रतिशत) में नगरीकरण का औसत एक-तिहाई से कुछ अधिक है। अरब राज्यों में नगरीकरण का स्तर (52.8%) दक्षिण एशियाई देशों का लगभग दो गुना है। (सारणी 2.1)

सारणी 2.1

विश्व के विभिन्न प्रदेशों में नगरीकरण का स्तर

	नगरीय/कुल जनसंख्या (प्रतिशत में)		
प्रदेश	**1975**	**2000**	**2015 (अनुमानित)**
विकासशील देश	26.1	40.00	48.5
अल्पतम विकसित देश	14.6	25.7	34.5
अरब राज्य	40.3	52.8	59.0
पूर्वी एशिया एवं प्रशान्त	19.7	37.7	50.1
लैटिन अमेरिका एवं कैरेबियन देश	61.4	75.4	80.5
दक्षिण एशिया	21.4	29.4	35.0
उप सहारा अफ्रीका	20.9	33.9	42.7
मध्य एवं पूर्वी यूरोप और CIS	57.7	63.4	64.8
आर्थिक सहयोग एवं विकास	70.4	76.9	80.4
विश्व	37.9	47.2	53.7

Source : Human Development Report 2002, U.N.D.P.

सारणी 2.2 से स्पष्ट है कि जहाँ एक ओर सिंगापुर और हांगकांग की सम्पूर्ण जनसंख्या नगरीय है और बेल्जियम की 98 प्रतिशत और कुवैत की 96 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है, वहीं दूसरी ओर रूआण्डा, भूटान और बरूण्डी की क्रमशः 6.2, 7.1 और 9 प्रतिशत जनसंख्या ही नगरीय है। इस प्रकार नगरीकरण (Urbanisation) की मात्रा में अत्यधिक भिन्नता को देखते हुए विश्व के समस्त देशों को निम्नांकित चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :-

(i) अति उच्च नगरीकृत क्षेत्र (75 प्रतिशत या अधिक)

(ii) उच्च नगरीकृत क्षेत्र (50-75 प्रतिशत)

(iii) निम्न नगरीकृत क्षेत्र (25 प्रतिशत से कम)

सारणी 2.2

विश्व के चयनित देशों में नगरीकरण का स्तर (2000 ई०)

	नगरीय/कुल जनसंख्या (प्रतिशत में)		
देश	1975	2000	2015
(अ) अति उच्च नगरीकरण (75 प्रतिशत एवं अधिक)			
सिंगापुर	100.0	100.0	100.0
हांगकांग	100.0	100.0	100.0
बेल्जियम	94.9	97.3	98.0
कुवैत	83.8	96.0	96.0
कतर	82.9	92.7	95.0
आइसलैण्ड	86.6	92.5	94.3
बहरेन	79.2	92.2	95.0
यूरूग्वे	83.1	91.9	94.4
इजराइल	86.6	91.6	93.5
लग्जेमवर्ग	73.7	91.5	95.0
आस्ट्रेलिया	85.9	90.7	94.8
यूनाइटेड किंगडम	88.7	89.5	91.0
नीदरलैण्ड	88.4	89.5	91.0
अर्जेनटाइना	80.7	88.2	92.2
लीबिया	60.9	87.6	90.3
जर्मनी	81.2	87.5	89.9
यूनाईटेड अरब अमीरात	65.4	86.7	91.6
सऊदी अरब	58.4	86.2	91.0
चिली	78.4	85.8	89.1
न्यूजीलैण्ड	82.8	85.8	87.5
डेनमार्क	81.8	85.1	85.7
कोरिया	48.0	81.9	88.2

ब्राजील	61.8	81.2	87.7
जापान	75.7	78.7	81.5
संयुक्त राज्य अमेरिका	73.7	77.2	81.0
फ्रांस	73.0	75.4	78.4
क्यूबा	64.2	75.3	78.5
(ब) उच्च नगरीकरण (50-75 प्रतिशत)			
नार्वे	68.2	74.7	78.9
चेक गणराज्य	63.7	74.5	76.4
मैक्सिको	62.8	74.4	77.9
रूसी संघ	66.4	72.9	74.0
पेरू	61.5	72.8	77.9
साइप्रस	45.2	69.9	74.6
इस्तोनिया	67.6	69.4	71.3
बेलारूस	50.3	69.4	72.6
लिथुअनिया	55.7	68.5	71.6
स्विजरलैंड	55.7	67.4	69.5
आस्ट्रिया	67.4	67.3	71.0
आर्मेनिया	63.0	67.2	71.0
इटली	65.6	66.9	70.6
टर्की	41.6	65.8	71.8
ट्यूनीशिया	49.8	65.5	73.5
हंगरी	52.8	64.5	69.4
पुर्तगाल	27.7	64.4	77.5
ईरान	45.8	64.0	73.2
बोलीविया	41.3	62.4	69.9
पोलैण्ड	55.4	62.3	66.5
यूनान	55.3	60.1	65.1
आयरलैण्ड	53.6	59.0	64.0
कोस्टारिका	42.5	59.0	66.5
क्रोशिया	45.1	57.7	64.4

स्लोवाकिया	46.3	57.4	62.0
अल्जीरिया	40.3	57.1	65.2
दक्षिण अफ्रिका	48.0	56.9	67.2
मंगोलिया	48.7	56.6	59.5
पनामा	49.0	56.3	61.7
परागुए	39.0	56.0	65.0
रोमानिया	46.2	51.1	59.3
(स) मध्यम नगरीकरण (25-50 प्रतिशत)			
स्लोवेनिया	42.2	49.2	51.6
बोत्सवाना	12.8	49.0	56.0
कैमरून	26.9	48.9	58.9
तुर्कमेनिस्तान	47.6	44.8	49.9
नाइजीरिया	23.4	44.1	55.5
मिस्त्र	43.5	42.7	45.8
अल्बानिया	32.7	42.3	51.9
इण्डोनेशिया	19.4	41.0	55.0
उजबेकिस्तान	39.1	36.7	38.4
सूडान	18.9	36.1	48.7
चीन	17.4	35.8	49.5
जिम्बावे	19.6	35.3	45.9
पाकिस्तान	26.4	33.1	39.5
भारत	21.3	27.7	32.2
म्यांमार	23.9	27.7	36.7
(द) निम्न नगरीकरण (25 प्रतिशत से कम)			
वियतनाम	18.8	24.1	31.6
श्रीलंका	22.0	22.8	29.9
नाइजर	10.6	20.6	29.1
थाईलैण्ड	15.1	19.8	24.2
लाओस	11.1	19.3	27.1
पपुआ न्यूगिनी	11.9	17.4	22.3

कम्बोडिया	10.3	16.9	26.1
इथोपिया	9.5	15.5	22.0
मलाबी	7.7	14.7	21.3
यूगाण्डा	8.3	14.2	20.7
नेपाल	5.0	11.8	17.9
भूटान	3.4	7.8	11.6
बरूण्डी	3.2	9.0	14.5
रूआण्डा	4.0	6.2	8.9
विश्व	37.9	47.2	53.7

Source: Human Development Report 2002, U.N.D.P.

(अ) अति उच्च नगरीयकृत क्षेत्र (75 प्रतिशत या अधिक)

विश्व के अधिसंख्य विकसित देशों और कुछ विकासशील देशों में भी नगरीयकरण का स्तर अधिक ऊँचा (75 प्रतिशत से अधिक) है। अति उच्च नगरीकरण के विभिन्न प्रदेश निम्नांकित है:-

(i) आंग्ल अमेरिका के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका (77.2%) और कनाडा (78.7%) अति उच्च नगरीकृत क्षेत्र हैं जिनके पूर्वी भागों में बड़े-बड़े संकेन्द्रित हैं।

(ii) पश्चिमी और मध्य यूरोपीय देशों में 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या नगरों में रहती है। यहाँ औद्योगिकीकरण अधिक हुआ है और व्यापारिक, तकनीकी तथा अन्य सेवाओं के क्षेत्र में भी विकास का स्तर उच्च पाया जाता है। बेल्ज्यिम (97.3प्रतिशत), आइसलैण्ड (92.5%), लग्जेमबर्ग (91.5%), यूनाइटेड किंगडम (89.5%), नीदरलैण्ड (89.5%), जर्मनी (87.5%), डेनमार्क (85.1%) और फ्रांस (75.4%) अति उच्च नगरीकृत देशों की श्रेणी में सम्मिलित हैं।

(iii) आस्ट्रेलिया (90.7%) और न्यूजीलैण्ड (85.8%) में नगरीय जनसंख्या का अनुपात 85 प्रतिशत से ऊपर है।

(iv) दक्षिणी अमेरिका के कई बड़े देशों जैसे यूरूग्वे (91.9%), अर्जटाइना (88.2%), चिली (85.8%), ब्राजील (81.2%) में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 80 प्रतिशत से ऊपर है।

(v) दक्षिण-पश्चिम एशिया में कुवैत (96%), बहरेन (92.2%), कतर (92.7%), इजराइल (91.6%), संयुक्त अरब अमीरात (86.7%), सऊदी अरब (86.2%) और पूर्वी एशिया में जापान (78.8%) में भी अधिक नगरीयकरण हुआ है। सिंगापुर और हांगकांग की शत प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है।

(vi) उत्तरी अफ्रीका में लीबिया (87.6%) भी अति उच्च नगरीकृत देशों के अन्तर्गत आता है।

(ब) उच्च नगरीय क्षेत्र (50-75 प्रतिशत)

इसके अन्तर्गत कुछ यूरोपीय विकसित देशों के अतिरिक्त 30 से अधिक विकासशील देश सम्मिलित हैं। प्रमुख उच्च नगरीकृत क्षेत्र निम्नांकित है:-

(i) यूरोप में नार्वे (74.7%), चेक गणराज्य (74.5%), रूस (72.9%), साइप्रस (69.9%), बेलारूस (69.

4%), स्विटजरलैण्ड (67.4%), अस्ट्रिया (67.3%), इटली (66.9%), हंगरी (64.5%), पुर्तगाल (64.4%), पोलैण्ड (62.2%), यूनान (60.1%), आयरलैण्ड (59%), रोमानिया (51.1%), आदि देश उच्च नगरीकृत हैं।

(ii) लैटिन अमेरिका में मैक्सिको (74.4%), पेरू (72.8%), बोलीनिया (62.4%), कोस्टारिया (59%), पनामा (56.3%), पराग्वे (56%) आदि देश।

(iii) एशिया में ईरान (64%), फिलीपाइन्स (58.6%), मंगोलिया (56.6%), कजाकिस्तान (55.8%) आदि देश।

(iv) उत्तरी अफ्रीका में अल्जीरिया (57.1%) और दक्षिणी अफ्रीका (56.9%) भी उच्च नगरीकृत देश हैं।

(स) मध्यम नगरीकृत क्षेत्र (25-50 प्रतिशत)

इस श्रेणी के अन्तर्गत वे विकासशील देश आते हैं जिनकी अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है और आधी या इससे अधिक जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। मध्यम नगरीकरण वाले प्रमुख देश निम्नांकित हैं:-

(i) एशिया में इण्डोनिशिया (41%), चीन (36.1%), पाकिस्तान (33.1%), म्यांमार (27.7%), भारत (27.7%) और बांग्लादेश (25%) आदि बड़े देशों में नगरीकरण का स्तर मध्यम श्रेणी का है। पूर्व सोवियत संघ के सदस्य रह चुके देश उजबेकिस्तान (36.7%), तुर्कमेनिस्तान (44.8%) और किरगिजस्तान (34.3%) भी इसी श्रेणी में आते हैं।

(ii) अफ्रीका महाद्वीप के अनेक छोटे-बड़े देश मध्यम नगरीकृत वाले देशों की श्रेणी में आते हैं। इनमें बोत्सवाना (49%), कैमरून (48.9%), नाइजीरिया (44.1%), मिस्त्र (42.7%), घाना (36.1%), सूडान (36.1%), जिम्बाब्वे (33.3%), नामीबिया (30.9%), जाम्बिया (39.6%), अंगोला (34.2%), मोजम्बिक (32.1%) आदि उल्लेखनीय है।

(द) निम्न नगरीकृत क्षेत्र (25 प्रतिशत से कम)

विश्व के अनेक विकासशील और पिछड़े हुए देशों में कृषि, पशुपालन आदि प्राथमिक क्रियाओं की प्रमुखता पायी जाती है और वहाँ की 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गाँवों में रहती है तथा प्राथमिक क्रियाओं में लगे हैं। दक्षिण-पूर्वी एशिया और अफ्रीका महाद्वीप के बहुत से देश इस श्रेणी में शामिल हैं:-

(i) दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में वियतनाम (24%), श्रीलंका (22.8%), थाईलैण्ड (19.8%), लाओस (19.3%), पपुआ न्यूगिनी (17.4%), कम्बोडिया (16.9%), नेपाल (11.8%), भूटान (7. 1%) आदि देश।

(ii) अफ्रीका में नाइजर (20.6%), इथोपिया (15.5%), मलाबी (14.7%) यूगाण्डा (14.2%), बरूण्डी (9%), रूआण्डा (6.2%) आदि देश।

2.5 नगरीय समस्याएँ (Urban Problems)

हमलोगों ने देखा कि जहाँ एक ओर सिंगापुर और हांगकांग की सम्पूर्ण जनसंख्या नगरीय है और बेल्जियम की 98 प्रतिशत और कुवैत की 96 % जनसंख्या नगरों में निवास करती है, वहीं दूसरी ओर रूआण्डा (6.2%), भूटान (7.1%) और बरूण्डी में (9%) जनसंख्या ही नगरीय है।

नगरीय समस्याओं का मूल कारण नगरों में आवश्यकता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण तथा नगर के अनियोजित विस्तार एवं विकास को माना जाता है। केवल विकासशील देशों में ही नहीं, बल्कि विश्व के विकसित देशों में भी अधिसंख्य नगरों का विकास अनियोजित ढंग से हुआ है। वास्तव में नगर में जनसंख्या केन्द्रीकरण इतनी शीघ्रता और अनियंत्रित ढंग से होता है कि वहाँ अपेक्षित नागरिक सुविधाओं का विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ जन्म लेती है।

नगर में रहनेवाले नागरिकों को सामान्यत: यह अपेक्षा रहती है कि जीवन के लिए आवश्यक नागरिक सुविधाएँ उन्हें प्राप्त होंगी और वे स्वस्थ्य तथा सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे। प्रत्येक नगरवासी के लिए पर्याप्त भोजन, समुचित आवास, रोजगार, शुद्ध पेय जल एवं शुद्ध वायु, परिवहन के साधन, स्वच्छ पर्यावरण, बिजली और स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन जैसी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराना नगर का सामान्य दायित्व होता है। किन्तु तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति मिलने वाली इन सेवाओं तथा सुविधाओं की मात्रा घटती जाती है जिसके फलस्वरूप नगर में शांति, सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होने लगता है और नगर समस्या ग्रस्त बन जाता है।

यद्यपि नगर अपने निवासियों को विविध जनोपयोगी सेवाओं तथा सुविधाओं को प्रदान करने हेतु प्रत्यनशील रहता है, किन्तु अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के अनुरूप विविध सुविधाओं को उपलब्ध कराने में असमर्थ हो जाता है जिससे नगर में अनेक वस्तुओं तथा सेवाओं की निरन्तर कमी अनुभव की जाती है। सामान्य रूप से पायी जाने वाली प्रमुख नगरीय समस्याएँ हैं- (i) स्थानाभाव की समस्या (ii) आवास की समस्या (iii) परिवहन की समस्या (iv) जलापूर्ति की समस्या (v) विद्युत आपूर्ति की समस्या (vi) चिकित्सा, शिक्षा आदि सेवाओं की समस्या (vii) नगरीय अपशिष्ट की समस्या (viii) मल-मूत विसर्जन तथा जल निकासी की समस्या (ix) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या।

(i) स्थानाभाव की समस्या: विभिन्न नगरीय सुविधाओं- रोजगार, शिक्षा, मनोरंजन, परिवहन एवं संचार आदि से आकर्षित होकर ग्रामीण जनसंख्या बड़ी संख्या में निकटवर्ती नगर की ओर पलायन करती है, जिससे नगर में जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जाती है जिसके रहने के लिए अतिरिक्त आवास, रोजगार, आवश्यकता पड़ती है जिससे मुख्यत: दो प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है:- (अ) कृषि भूमि पर अतिक्रमण और (ब) भूमि के मूल्यों में तीव्र वृद्धि।

(अ) कृषि भूमि पर अतिक्रमण :- नगर में नये-नये उद्योग-धन्धों दुकानों, होटलों, कार्यशालाओं, कार्यलयों, आवास गृहों, पार्को आदि के लिए अधिकाधिक भूमि की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति के लिए नगर का विस्तार बाहर की ओर ग्रामीण क्षेत्रों की ओर होता है। इस प्रकार जिस भूमि पर पहले अन्न, साग-सब्जियों, फलों, फूलों आदि की खेती की जाती थी उनपर नगरीय अतिक्रमण के फलस्वरूप इस प्रकार के कृषीय उत्पादन सम्भव नहीं हो पाते हैं। नगर के बाहय विस्तार के कारण नगरीय उपान्त सदैव नगरीय दबाव से पीड़ित रहता है, सीमावर्ती कृषकों को विवश होकर अपनी भूमि नगरीय उपयोग के लिए बेचनी पड़ती है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देशों में यदि नगरीय विस्तार के कारण उपजाऊ और कृषि योग्य भूमि पर मकान बना लिए जायेंगे तथा नगर के बाहर स्थित हरे-भरे बाग-बगीचे तथा कृषि क्षेत्र समाप्त हो जायेंगे तो पहले से ही विद्यमान खाद्य समस्या विकराल रूप धारण कर लेगी जिसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। कृषि भूमि के अभाव की समस्या केवल विकासशील देशों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, जापान आदि अनेक विकसित देशों में भी भयावह होती जा रही है। विश्व के विकसित